Tanjavur
Bṛhadīśvara temple

The Monument and the Living Tradition

बृहदीश्वर प्रकल्प

राजराज चोल द्वारा वर्ष 1010 ई. में निर्मित बृहदीश्वर मंदिर चोल कला एवं स्थापत्य का सर्वोत्कृष्ट उदाहरण है। इसके अद्वितीय रूप एवं अनुपम सौन्दर्य के चलते यूनेस्को ने इसे विश्व दाय स्मारक घोषित किया है। मंदिर के भीतरी भाग का स्थापत्य, मूर्तिकला, चित्रकला, पाषाण एवं कांस्य प्रतिमाएँ तथा बाह्य दीवारों का उत्कीर्ण फलक और इसके अंग-प्रत्यंग तथा समग्र में अनुस्यूत समानुपात, इसके कलात्मक सौन्दर्य की अभिवृद्धि करता है। मंदिर में उपलब्ध विपुल अभिलेख विगत युग के आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, प्रशासनिक एवं संरचनात्मक संरूपों पर पर्याप्त प्रकाश डालते हैं। इसीलिए यह मंदिर हमेशा से पुरातत्त्ववेत्ताओं, लिपि वैज्ञानिकों, आलोचकों, संगीतज्ञों, नर्तकों, शिल्पियों, समाज वैज्ञानिकों तथा नृ-तत्त्वशास्त्रियों के अध्ययन का केन्द्र रहा है। यद्यपि विशेषज्ञों एवं संस्थाओं ने इस मंदिर पर उत्कृष्ट काम किया है पर इस पर हुए अधिकांश अध्ययनों का दृष्टिकोण एकतरफा रहा है और एक समग्र रूप में इसका अध्ययन होना अभी शेष है।

अपने क्षेत्र-सम्पदा कार्यक्रम के अन्तर्गत, इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र ने इस मंदिर के भौतिक एवं संकल्पनात्मक रूप एवं संरचना को केन्द्र बनाते हुए, इस मंदिर का बहु आयामी एवं बहुस्तरीय गहन अध्ययन प्रारम्भ किया। इसकी सबसे बड़ी चुनौती थी पुरातत्त्वशास्त्र, लिपिशास्त्र, स्थापत्य, संस्कृत, मंदिर विधान, फोटोग्राफी तथा कम्प्यूटर विज्ञान के विशेषज्ञों को एक मंच पर लाकर उनमें संवाद स्थापित करना। साथ ही राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय संस्थानों एवं विभिन्न विषयों के विशेषज्ञों का सहयोग भी प्राप्त किया गया।

इस परियोजना की मूल संकल्पना डा. (श्रीमती) कपिला वात्स्यायन ने की थी तथा अध्ययन एवं समन्वायन का कार्य डा. आर. नागास्वामी ने किया। इसका समग्र सम्पादन कार्य इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के सांस्कृतिक सांयंत्रिक संचार विभाग द्वारा किया गया। इसके कुछ मुख्य परस्पर संबद्ध घटक हैं – पुरालेख, स्थापत्यपरक एवं फोटोग्राफिक अभिलेख, पाठपरक अध्ययन, मूर्तियों, कांस्य प्रतिमाओं तथा चित्रों का मूर्तिलक्षणपरक अध्ययन, जीवन्त परम्पराओं के वास्तु एवं शिल्पपरक अध्ययन, संगीत एवं नृत्य परम्पराओं का सर्वेक्षण एवं प्रलेखन, तथा मंदिर के सामाजिक एवं राजनैतिक इतिहास का अध्ययन।

अन्तर्क्रियात्मक बहुमाध्यमिक डी वी डी

प्रस्तुत अन्तर्क्रियात्मक बहुमाध्यमिक डी वी डी, बृहदीश्वर मंदिर के गहन सांस्कृतिक अध्ययन के लिए विषयगत व्याख्या प्रणाली प्रस्तुत करता है। इस डी वी डी के माध्यम से मंदिर की स्थापत्यपरक संरचना को क्षैतिज एवं ऊर्ध्वगामी दोनों तरह से देखा जा सकता है। बीच की सभी प्रतिमाएँ एवं उनका संक्षिप्त वर्णन भी दिया गया है।

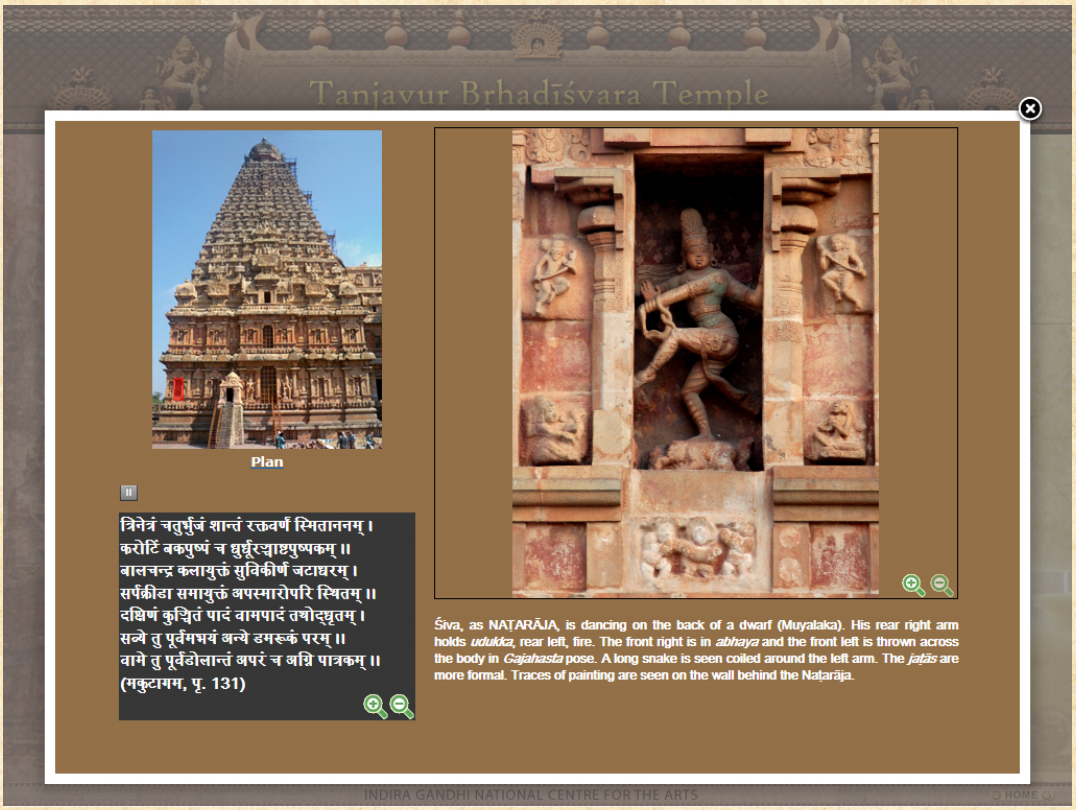

बृहदीश्वर मंदिर मूर्तिलक्षणपरक प्रस्तुतियों का एक अतुल्य भण्डार है। इसका मुख्य वैशिष्ट्य इसका बृहदाकार शिवलिंग है। डी वी डी में मंदिर के विमान के भूतल और ऊपरी तल में विद्यमान सभी मूर्तियों के पाठगत वर्णन, ध्यान श्लोक तथा ध्यान श्लोकों का वायसओवर (ध्वनि) भी दिये गए हैं। गर्भगृह के ठीक ऊपर विमान के भीतरी भाग के प्रथम तल में भरतमुनि के नाट्यशास्त्र में वर्णित 108 नृत्य-करणों के लिए जगह बनी है पर केवल 81 नृत्य करणों का काम पूरा हो पाया था। डी वी डी में आप ये नृत्य-करण नाट्यशास्त्र के सम्बद्ध श्लोकों सहित देख सकते हैं। साथ ही गर्भगृह के प्राकार में भित्तिचित्र अंकित हैं जो चोल कलाकृतियों के एकमात्र अवशेष हैं। इन्हें भी सुविधा की दृष्टि से अलग-अलग विभागों में वर्गीकृत किया गया है। इस मंदिर में अनेक स्थलों पर मंदिर के निर्माण, प्रबंधन, प्रशासन तथा भूमि अनुदान आदि अंकित हैं जिनका क्रमबद्ध अनुवाद डी वी डी में दिया गया है।

इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र द्वारा इस मंदिर के नित्य, नैमित्तिक एवं आनुष्ठानिक कृत्यों का गहन प्रलेखन किया गया है और यह समस्त प्रलेखन डी वी डी में संबद्ध है। डी वी डी में परम्परागत न्यासियों तथा प्रसिद्ध संगीतज्ञ श्री किटप्पा पिल्लै के साक्षात्कार भी दिये गए हैं।

मंदिर में समय-समय पर अनेक संरचनागत परिवर्तन होते आए जो क्रमिक विकास को दर्शाते हैं। ये सभी इस डी वी डी में एक समयरेखा के माध्यम से दिखाए गए हैं। दर्शकों की सुविधा के लिए अद्यतन तकनीकी उपकरणों का इस्तेमाल हुआ है। आप 360 डिग्री में मंदिर का विहंगम दृश्य भी देख सकते हैं। अपने अतीत को समझने का तथा अपने पारम्परिक ज्ञान एवं उपलब्धियों को आधुनिक बहुमाध्यमिक प्लेटफार्म के माध्यम से जानने का अपनी तरह का यह अनूठा प्रयास है।